उपसंहार

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध "महात्मा गाँधी और वीर सावरकर के राष्ट्र सम्बन्धी विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" में उन मौलिक तथ्यों पर विचार किया गया है जिनके आधार पर सावरकर और गाँधी के राष्ट्र सम्बन्धी विचारों पर विद्धावानों ने विचार किया है.

भारत में गाँधीवाद और हिंदूवाद, भारतीय राष्ट्रिय आन्दोलन से वर्तमान समय तक राजनीतिक विमर्श के केंद्र में रहा है.हिंदूवादी विचारक यह मानते हैं कि "यह धरती हमारी माता है और हम सब उसके पुत्र है" यह मन्त्र प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर यह भाव निर्माण करता है कि मैं इस राष्ट्र का घटक हूँ राष्ट्र के लिए ही मेरा जीवन है. जो कुछ भी करूँगा राष्ट्र के लिए करूँगा ऐसा विचार और आचरण होने पर ही सामर्थ्य निर्माण होता है हमारा उपास्य देव यह राष्ट्र है. हमारे पास एक श्रेष्ठ उच्च ध्येय है कि भारत हमारी मात्रभूमि है. यहाँ एक राष्ट्र प्राचीन काल से ही रहा है, ऐसे हिंदू राष्ट्र को हमें समर्थ बनाना है. यही ध्येय आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देता है. इस विचार को मानाने वाले अध्यात्मिक मानव सावरकर, गोलवलकर,दीनदयाल उपाध्याय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी इत्यादि रहे है, जीनके लिए राष्ट्र प्रमुख रहा है. इनके राष्ट्र एक भाषा, एक धर्म, एक जाति के आधार पर परिभाषित होती है. जबकि गाँधी के राष्ट्र में व्यक्ति प्रमुख है. गाँधीजी का यह मानना है कि समूचे हिंदुस्तान के साथ व्यवहार करने के लिए हमको भारतीय भाषाओँ में से एक ऐसी भाषा की जरुरत है, आज ज्यादा से ज्यादा तादाद में लोग जानते हो और बाकी के लोग जल्दी से सिख सकें. गाँधीजी सबको मिलाकर एक दिशा में आगे बढ़ने की बात करते थे. जबकि हिन्दू राष्ट्रवादीयों के लिए एक विशेष धर्म पर बल दिया जाता था. इसी कारण हिन्दू राष्ट्रवाद को एकाधिकारवादी राष्ट्र के रूप में भी परिभाषित किया जाता है.

विपिन चन्द्र का मानना है कि, भारतीय लोगो का स्वराज या उत्तर- उपनिवेशिता के लिए गाँधी के नेतृत्व में प्रति अधिकार क्षेत्रीय संघर्ष एक रस्मी वर्ग संघर्ष नहीं था, अपितु साम्राज्यवाद विरोधी, उत्तर औपनिवेशिक राष्ट्रीय पहचान के लिए, साम्राज्यवाद /उपनिवेशवाद के विरुद्ध बहु-वर्गों का आन्दोलन था.

सावरकर के अनुसार हिंदुत्व या एक हिंदू होने का सार उन बंधनों से निर्धारित होता है जो हम अपने सामान पितृभूमि के साथ रखते हैं और उस सामान रक्त से जो हमारी नसों में प्रवाहित होता है और सामान आधार के उस बंधन से जो हम अपनी महान सभ्यता या हिंदू संस्कृति के साथ बनाते हैं इस प्रकार परिभाषित होकर, हिंदुत्व का मतलब था विभेद की वह रेखा खींच देना और उस स्थिति पर अच्छी तरह निशान बना देना जो अपनी महान सभ्यता और संस्कृति के लिए था ताकि स्वयं इन्हें यह पता लग जाए कि यह वास्तव में कहां खड़े हैं और किस प्रकार यह सुनिश्चित रूप से अपने आप में एक लोग है. हिंदुत्व हिंदू व्यक्ति की उस संपूर्णता का नाम था जिसमें उसकी जातिय, भौगोलिक और सांस्कृतिक पहचाने शामिल है, और इसका अभिप्राय था हिंदू सभ्यता के सभी साथी कम्युनिटीज और संभागों को साथ मिलाना और यह उद्घोषित करना कि वे सब अपने आप में एक लोग हैं. जबकि हिंदूवादी सिद्धांतकारों की तुलना में गाँधीजी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक सामंजस्य, दोनों के लिए ही काफी चिंतित है जिसमें बाद वाले की चिंता ने राजनीति और नैतिकता या नीति के बीच अंतर्संबंधो के गाँधी के विचारों को काफी प्रभावित किया था.

यह भी नोट करने की जरूरत है कि सर्वधर्म समभाव का सिद्धांत अपने आप ना तो धार्मिक संप्रदायवाद को प्रोत्साहित करता है और ना ही उसे रोकता है सर्वधर्म समभाव की राजनीति से जिस लक्ष्य को प्राप्त किया जाता है वह है समानता का सिद्धांत, जिसका स्वरूप सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने में सफल होगा. इस सिद्धांत को या तो औपचारिक प्रजातंत्र विरोधी के रूप में बताया जाएगा. जिसका मतलब हुआ कि अल्पसंख्यकों को उनके मूलभूत अधिकारों और स्वतंत्रता से वंचित कर दिया जाएगा. या एक प्रजातंत्र, को

समान अधिकार वाले अर्थ में, अल्पसंख्यक को बड़े घटनाओं के सामने भी स्वतंत्रता मिल जाएगा. छदम हीन समानता के वास्ते अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रावधान करने होंगे गांधी के मामले में निश्चित ही उसकी सर्वधर्मसमभाव की धारणा का अर्थ व्यवहार में लाना था यानी सत्य और अहिंसा की राजनीति द्वारा स्वराज्य और सर्वोदय की प्राप्ति.